Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language,
Online ISSN 2348-3083, SJ IMPACT FACTOR 2019: 6.251, www.srjis.com
PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL, AUG-SEPT, 2020, VOL- 8/41

माध्यमिक स्तर के शिक्षकों की शैक्षिक अभिवृत्ति का अध्ययन

अरमान अली

शोधार्थी, मनोविज्ञान विभाग, arman9718839522@gmail.com

Abstract

अभिवृत्ति मनोवैज्ञानिक संप्रत्ययों का एक समुच्चय होता है जिसमें संज्ञानात्मक, भावनात्मक और व्यवहार संबंधित धनात्मक अथवा ऋणात्मक घटक तत्व समाहित होते हैं। अभिवृत्ति व्यक्तियों के दैनिक जीवन के अर्जित अनुभवों को सामान्यीकृत करने के फलस्वरूप निर्मित होती है। अभिवृत्ति व्यक्ति की वह प्रवृत्ति है जो उसे किसी वस्तु, व्यक्ति आदि के संबंध में किसी विशिष्ट प्रकार के व्यवहार को प्रदर्शित करने के लिए प्रेरित करती है। वर्तमान समय में शिक्षकों का पठन-पाठन के प्रति अभिवृत्ति में बदलाव दृष्टिगत हो रहे हैं। प्रतिस्पर्धा के कारण शिक्षकों में शिक्षा के प्रति अभिवृत्तियों एवं अभिरुचियों में परिवर्तन देखने को मिल रहे हैं। शिक्षक वर्तमान समय में शिक्षा को नैतिक मूल्यों से दूर करके व्यवसाय से संबंधित समझ रहे है। इस स्थिति में यह आवश्यक हो जाता है कि शिक्षा के प्रति शिक्षकों की अभिवृत्ति को सकारात्मक दिशा में बढ़ाकर मूल्य आधारित समाज का निर्माण किया जा सके। इसलिए वर्तमान परिपेक्ष्य को दृष्टिगत रखते हुए विभिन्न शोध-पत्रों, पुस्तकों, सहायक सामग्रियों की सहायता से शोध प्रपत्र लेखन-कार्य को पूर्ण किया है।

शब्द कुंजी *- शैक्षिक अभिवृत्ति, शिक्षक, नैतिक मूल्य, विद्यार्थी, योग्यता, अकादमिक उपलब्धि ।*

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

प्रस्तावना

अभिवृत्ति की परिभाषाएं

अभिवृत्ति के स्वरूप को परिभाषित करने के संदर्भ में 'अनुप्रयुक्त मनोविज्ञान' विषय में वाद-विवाद रहा है, क्योंकि इसका विशेष कारण यह है कि अधिकांश परिभाषाओं को नैतिकता के दृष्टिकोणों को ध्यान में रखकर अध्ययन किया गया है। जिसके कारण अभिवृत्ति को परिभाषित करना जटिल कार्य हो जाता है। कोई भी विद्वान अभिवृत्ति की स्पष्ट परिभाषा नहीं दे पाया है। अनेक विद्वानों ने अपने अनुसार अभिवृत्ति की परिभाषाएं बतायी है। विद्वान आलपोर्ट (1935) के अनुसार अभिवृत्ति मानव की मानसिक एवं तांत्रिक प्रक्रियाओ की दिशा की तैयारी को कहते हैं, जिसमें व्यक्ति अपने अनुभवों, दिशाओं और तथ्यात्मक प्रभावों के द्वारा किसी वस्तु के प्रति विशिष्ट व्यवहारों को प्रदर्शित करता है। विद्वान एडवर्ड (1969) के अनुसार अभिवृत्ति व्यक्तियों के मनोवैज्ञानिक तत्वों से संबंधित होती है जो धनात्मक अथवा ऋणात्मक प्रभाव की तीव्रता को इंगित करती है। विद्वान विंस्टन चर्चिल (1895) के अनुसार रवैया (अभिवृत्ति) एक छोटी सी बात होती है परंतु इससे मनुष्य पर बहुत फ़र्क या प्रभाव पड़ता है।

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

अभिवृत्ति को प्रभावित करने वाले कारक

मानव व्यवहार में मनुष्य की अभिवृत्तियाँ विभिन्न पक्षों से प्रभावित होती है। अभिवृत्तियाँ व्यक्ति के अनुभवों के आधार पर विकसित होती है अभिवृत्ति को प्रभावित करने में व्यक्तियों के अनुभवों का विशेष योगदान होता है। व्यक्तियों के अनुभवों के आधार पर ही अभिवृत्ति का निर्माण होता है, जिसकी वजह से व्यक्तियों की अभिवृत्ति प्रभावित होती है। पिछले कुछ विगत वर्षों में हुए अध्ययनों के आधार पर ज्ञात हुआ है कि परिवार एवं विद्यालय एवं महाविद्यालय परिवेश आदि का प्रभाव शिक्षकों के व्यवहारों पर भी पड़ता है जिससे शिक्षकों की अभिवृत्तियाँ भी प्रभावित होती है।

परिवार एवं विद्यालय का परिवेश

शैशवावस्था काल में माता-पिता एवं परिवार के अन्य सदस्य बच्चों के अभिवृत्ति निर्माण में अहम भूमिका निभाते है। तत्पश्चात् बच्चों की अभिवृत्ति निर्माण में विद्यालय का परिवेश या वातावरण भी अभिवृत्ति निर्माण को विकसित करने में भी महत्त्वपूर्ण पृष्ठभूमि होती है। अगर बच्चों या व्यक्तियों को परिवारों एवं विद्यालयों के द्वारा उनको सकारात्मक वातावरण नहीं मिलता है तो उनकी अभिवृत्ति निर्माण में एक बाधा या रुकावट उत्पन्न होती है।

विद्यालय एवं महाविद्यालय

शिक्षकों एवं विद्यार्थियों की अभिवृत्ति को परिवर्तित करने में विद्यालय एवं महाविद्यालय का भी महत्त्वपूर्ण योगदान होता है। विद्यालय और महाविद्यालय में छात्र और छात्राएं विभिन्न संप्रदायों के अलग-अलग जाति या वर्गो से संबंध रखते है, व पढ़ने-लिखने के लिए आते है। वह आपस में बातचीत करने लगते है और आपस में घुल-मिल जाते है। वह एक दूसरे के घनिष्ठ मित्र भी बन जाते है। निकटताओं के कारण उनकों एक-दूसरे को जानने का मौका भी मिलता है। नए-नए अनुभवों को सीखने लगते है और नए अनुभवों के कारण की वजह से उनके आधारहीन विश्वासों वाली अभिवृत्ति में परिवर्तन होने लगता है, या वह अभिवृत्ति को परिवर्तित करने के लिए तत्पर रहते है। स्टीम्बर 1961 ने बताया है कि शिक्षा का स्तर बढ़ने के साथ-साथ बच्चों या विद्यार्थियों की पूर्वधारणा मिटने या विस्मरण होने लगती है।

शैक्षिक अभिवृत्ति

अभिवृत्ति एक विश्वास होता है जो समाज के हर मनुष्य या व्यक्ति का अपने परिवेश और अन्य व्यक्तियों के प्रति होता है। उदाहरण स्वरूप शिक्षकों एवं विद्यार्थियों की शिक्षा के प्रति विशिष्ट अभिवृत्ति होती है। उसका विकास शिक्षा में किस तरह से होता है और वह किस तरह से अपने व्यवहारों को प्रदर्शित करते है। शिक्षकों एवं विद्यार्थियों के व्यवहारों में किया-किया परिवर्तन दृष्टिगत होते है। शिक्षा को अभिवृत्ति से संबंधित करते हैं और शैक्षिक अभिवृत्ति में शिक्षकों एवं विद्यार्थियों का शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

विकास होता है। शिक्षा के माध्यम से शिक्षकों एवं विद्यार्थियों की अधिगम प्रक्रिया और अनुभवों के द्वारा ही सीखने की अलग-अलग योग्यता विकसित होती है। शिक्षा से संबंध रखने वाले व्यक्तियों एवं शिक्षकों को अपनी कार्य करने की योग्यता एवं क्षमताओं से प्रभावित करते है।

शिक्षा व्यक्तियों की श्रेष्ठ व्यक्तित्व और उसके संस्कारों की एक महत्त्वपूर्ण प्रक्रिया होती है। बच्चे अपने माता-पिता के साथ घर पर रहते है, मनुष्यों के व्यक्तित्व का अनुष्ठान मनुष्य के सिर पर होता है परंतु हर परिवार में ऐसे व्यक्ति भी होंगे जो सभी गुणों से समृद्ध हो सकते है और कुछ परिवारों में नहीं होते है। इसलिए परिवारों के संस्कारों की अपनी भी कुछ सीमाएं होती है। एक बच्चे का पहला गुरु उसके माँ-बाप होते है, परंतु माता-पिता के बाद बच्चे की सर्वाधिक ज़िम्मेदारी शिक्षकों की होती है।

शिक्षक किसी भी समाज का महत्त्वपूर्ण हिस्सा होता है क्योंकि समाज में शिक्षकों का उत्तरदायित्व बहुत ही महत्त्वपूर्ण माना जाता है। शिक्षक ही विद्यार्थियों में शिक्षा एवं ज्ञान के साथ-साथ वह उनके अंदर नैतिक मूल्यों को विकसित करते है। शिक्षक और विद्यार्थियों का रिश्ता एक फूल और माली जैसा होता है जिसमें शिक्षक एक बगीचे को अपने ज्ञान के द्वारा सींचता है और विद्यार्थियों को एक आकर्षक फूल बनाता है।

एक योग्य शिक्षक तभी बना जा सकता है जब उसकी शिक्षण कार्य के प्रति अभिरुचि हो, शिक्षकों को विषयों के ज्ञान के साथ-साथ विद्यार्थियों के सम्पूर्ण विकास पर भी कार्य करना चाहिए। क्योंकि विद्यार्थियों का अलग-अलग तरह का व्यवहार उनके शिक्षकों के व्यवहारों पर आधारित होता है। शिक्षकों को अपने विषय क्षेत्र के ज्ञान के साथ-साथ एक कुशल मनोवैज्ञानिक भी होना चाहिए, क्योंकि कभी-कभी विद्यार्थियों की मनोदशा अस्थिर हो जाती है। उनकी मनोदशा का विश्लेषण करके उनकी नकारात्मक अभिवृत्तियों को दूर किया जा सके, जिसके पश्चात् विद्यार्थी सकारात्मक अभिवृत्ति के साथ समाज के विकास मे अपना सहयोग कर सके। प्रतिभाशाली शिक्षकों की संगति के साथ में रहने के कारण ही उसका लाभ विद्यार्थियों या स्कूलों को ही मिलता है। इसलिए शिक्षक का चरित्र, व्यक्तित्व और आचरण अनुकरणीय होना चाहिए। शिक्षकों में त्याग, सेवा, करुणा, प्रेम, विश्वास, राष्ट्रीयता, नैतिकता के त्याग मूल्यों के शिक्षकों का आदर्श व्यवहार और प्रभावित करने वाला व्यक्तित्व होना अति आवश्यक है। जिससे विद्यार्थियों की योग्यताओं एवं प्रतिभाओं का पता लगाया जा सके। शिक्षक पर समाज की बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी होती है क्योंकि शिक्षक ही विद्यार्थियों को राष्ट्र का एक आदर्श नागरिक बनाने में अहम भूमिका निभाते है। ताकि विद्यार्थियों को उनकी योग्यता एवं क्षमता के अनुसार शिक्षा एवं किसी भी अन्य क्षेत्र में अच्छी पहचान बनाकर वह राष्ट्र के एक अच्छे नागरिक की भूमिका अदा कर सके।

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

शिक्षक अभिवृत्ति

यह पद्धति निर्देशक या शिक्षक केंद्रित शिक्षण पद्धति होती है। इस पद्धति में शिक्षक किसी विषय के ज्ञाता के रूप में अपनी भूमिका का निर्वहन करते है। इस पद्धति में विद्यार्थी भी ज्ञान अर्जित करते हैं वह शिक्षा के द्वारा शिक्षकों से ही प्राप्त करते है। शिक्षक अभिवृत्ति जो है सामान्य रूप से शिक्षण प्रक्रियाओं और पद्धतियों के उपयोग में लाई जाती है और विद्यार्थियों के ज्ञान एवं कौशलों को विकसित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। इस प्रक्रिया में विषय को समझाने के लिए शिक्षक, विद्यार्थियों को उचित निर्देशन एवं परामर्श देते है। शिक्षक अभिवृत्ति में व्याख्यान पद्धति एक अच्छा उदाहरण है अथवा इस प्रकार की अन्य शिक्षण विधियों से शिक्षकों द्वारा बताई गई बातों से विद्यार्थियों की अभिवृत्तियों को प्रभावित करते है।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्त्व

यह सत्य है कि संस्कृति निरंतर बदलती रहती है, उसमें निरंतर परिवर्तन होता रहता है। कोई भी समाज सदा स्थिर नहीं रह पाता है। संस्कृति के संपर्क में आने से समाज में नई प्रवृत्तियाँ भी प्रवेश करती है। संस्कृतियों के बदलाव के कारण ही भौगोलिक परिवेश, सामाजिक परिवेश, औद्योगिकीकरण का विकास, आधुनिकीकरण के प्रत्यक्ष प्रभाव का होना स्वाभाविक है। आज के इस आधुनिक परिवेश में, व्यक्तियों कों उनकी आकांक्षाओं तथा अन्य कार्यो में अपनी रुचि अनुसार कार्य न मिलने के कारण अन्य व्यवसायों में और प्राथमिक कार्यों में एवं शिक्षकीय कार्यों में सम्मिलित हो जाते है। इस कारण शिक्षकों में शिक्षण कार्य के प्रति अभिवृत्ति नहीं के बराबर होती है। जिसकी वजह से शिक्षक, विद्यार्थियों और समाज के प्रति अपनी उचित भूमिका का निर्वहन नहीं कर पा रहे है। परिणाम स्वरूप समाज में अब शिक्षक को वह सम्मान नहीं मिल पा रहा है जो उनकों आज से 50 वर्ष पहले प्राप्त हुआ करता था। ऐसे में शिक्षक न तो किसी भी विषय लेकर विद्यार्थियों में भली प्रकार से ज्ञान का स्मरण नही करवा पाते हैं। न ही स्वयं लगनशील होकर शिक्षण कार्य कर पाते है। यही कारण है वह अपने विचारों को न तो सही ढंग से व्यक्त कर पाते हैं और न विद्यार्थियों द्वारा उठाई गयी समस्याओं एवं दुविधाओं का समाधान करने में अपनी भूमिका अदा कर पाते है। जो मर्यादा शिक्षकों में पूर्व में रही है वह अब विलुप्त होती जा रही है क्योंकि बाजारीकरण, आधुनिकीकरण तथा वैश्वीकरण के इस दौर में शिक्षक भी सम्मिलित हो गए है। वह आज अपनी जिम्मेदारी के महत्त्व को भी नहीं समझ पा रहे है। जिसके कारण शिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति, शिक्षण योग्यता, शिक्षण कार्य के प्रति स्व:प्रत्यक्षीकरण, समायोजन इत्यादि प्रभावित हो गया है। इस प्रभाव का असर शिक्षकों के मूल शिक्षण कार्य पर भी पड़ रहा है। आज शिक्षक का उद्देश्य शिक्षण होकर वेतन अथवा धन एकत्रीकरण पर अधिक हो गया है। जिससे शिक्षकों के नैतिक मूल्यों में

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

भी भारी गिरावट आ गयी है। इस परिवर्तन का सीधा प्रभाव समाज में प्रतिबिम्बित होने लगा है। हर क्षेत्र में संबंधित नैतिक मूल्यों मे गिरावट इस बात का द्योतक है कि सामाजिक परिदृश्य को सही दिशा देने वाला भी दिग्भ्रमित हो गया है। शिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति पूर्णता परिवर्तित होने लगी है। आज के आधुनिक युग में सूचना प्रौद्योगिकी एवं सूचना क्रान्ति के विकास और बदलावों के साथ-साथ सामाजिक मूल्यों एवं मान्यताओं में काफी बड़ा बदलाव हुआ है। जिसके कारण आज मानवीय समाज भी अनेक पर्यावरणीय तथा मनोसामाजिक समस्याओं से घिरा हुआ है। ऐसे में शिक्षा, शिक्षक और शिक्षार्थी जगत भी अछूता नहीं रहा है, परन्तु प्राचीन काल में भारतीय सभ्यता व विश्व की अनेक सभ्यताएं धार्मिक प्रवृत्ति से समृद्ध थी। जिसमें धर्म को आधार मानकर शिक्षा दी जाती थी। समाज के बदलते स्वरूप के साथ-साथ उसकी संस्कृति भी बदलती जा रही है।

शिक्षण अभिवृत्ति के अध्ययन करने के लिए अति आवश्यक हो जाता है कि इसकी मूलभूत संकल्पना को क्रमबद्धता के क्रम को समझें और इसके अंतर्गत नवीन आयामों पर भी शिक्षकों की पकड़ होनी चाहिए। साथ ही साथ शिक्षार्थी की विशेषताओं और अभिक्षमताओं को वरीयता के अनुसार अध्ययन करना भी अत्यंत महत्त्वपूर्ण है तथा पिछले कुछ विगत वर्षों में शिक्षण को नवीन पद्धतियों के साथ-साथ परंपरागत पद्धतियों के क्षेत्र में किए गए विकास को समझना भी आवश्यक है। शिक्षण के क्षेत्र में तकनीकी प्रणालियों का एवं कंप्यूटर आधारित मूल्यांकन प्रणाली की विशेषताओं का अध्ययन करना आवश्यक हो गया है।

शिक्षा के प्रति शिक्षकों की अभिवृत्ति

शिक्षक बनाना तो अधिकांश व्यक्ति चाहते है परंतु शिक्षक बनने के लिए व्यक्तियों में प्रतिभाओं और आकर्षक व्यक्तित्व के साथ-साथ विशेष प्रकार की अभिवृत्तियाँ होना बहुत जरूरी है। इन दृष्टिकोणों में सर्वप्रमुख यह भी माना गया है कि व्यक्तियों में शिक्षा के प्रति लक्ष्यात्मक दृष्टिकोण विकसित होना चाहिए जो शिक्षा के सभी उद्देश्यों की पूर्ति करता हो। व्यक्तियों के अंदर शिक्षा के प्रति रुचि होनी चाहिए जो उसकों शिक्षक बनाने हेतु योग्य औपचारिकताएं प्रदान करवाती हो, इन समस्त गुणों के भार के साथ व्यक्ति शिक्षा को व्यवसाय के रूप में ग्रहण कर सकता है।

शिक्षण कार्य शिक्षकों को निरंतर अपनी पूर्व शिक्षा अनुभवों के आधार पर और सामाजिक मानकों एवं मूल्यों की उपयोगिता तथा ज्ञान के माध्यम से विद्यार्थियों को संप्रेषित करते हुए समाज के सर्वांगीण विकास को जरूरी समझते हुए अपने शैक्षिक कार्यों को करना चाहिए। इस तरह से शिक्षकों को सामाजिक एवं शैक्षिक विकास की वृद्धि के लिए अपना अमूल्य योगदान हमेशा प्रदान करते रहना

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

चाहिए, इस तरह वह सच्चे अर्थों में एक आदर्श शिक्षक बन सकते है और वह आदर्श विद्यार्थी राष्ट्र को प्रदान कर सकेंगे।

साहित्य पुनरावलोकन

श्रीवास्तव, के. ए. और लाल, बी. (2013). इंटरनेशनल जर्नल ऑफ क्रिएटिव रिसर्च ने निःशुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 के प्रति अध्यापकों की अभिवृत्ति का अध्ययन किया है। निःशुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार को भारत में लागू हुए एक दशक से अधिक समय हो गया है। यह अधिनियम अपने उद्देश्यों के आधार पर कितना सफल हुआ है इसका अवलोकन विद्यालयों में अध्यापनरत शिक्षकों की अभिवृत्ति का अध्ययन करके भी किया जा सकता है। प्रस्तुत अध्ययन राजस्थान के दौसा जनपद के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में स्थित सरकारी एवं निजी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों पर आधारित है। प्रस्तुत अध्ययन में प्रतिदर्श के रूप में ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में स्थित 04 सरकारी एवं 04 निजी प्राथमिक विद्यालयों के कुल 320 अध्यापकों में 160 शिक्षकों और 160 शिक्षिकाओं का चयन यादृच्छिक विधि द्वारा किया गया। प्रस्तुत अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया। प्रदत्त संकलन के लिए स्वनिर्मित उपकरण निःशुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार 2009 के प्रति अभिवृत्ति मापनी का प्रयोग किया गया जो कि लिंकर्ट की पाँच बिंदु मापनी पर आधरित है। स्वनिर्मित अभिवृत्ति मापनी के द्वारा आंकड़ों का संग्रहण किया गया और आंकड़ों के विश्लेषण के लिए माध्य, मानक विचलन, एवं टी मान सांख्यिकी विधियों को प्रयोग में लाया गया। प्रस्तुत अध्ययन के परिणामों से यह निष्कर्ष प्राप्त हुए कि सरकारी एवं निजी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक और शिक्षिकाओं की निःशुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर है। ग्रामीण एवं शहरी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक और शिक्षिकाओं की निःशुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं है। शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं की निःशुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 के प्रति अभिवृत्ति में कोई भी सार्थक अंतर नहीं है।

मूछाल, एम. कु. और चन्द, एस. (2015). एशियन जर्नल ऑफ द बहुविषयक अध्ययन. ने प्राथमिक स्तर पर कार्यरत बी.एड. एवं बी.पी.एड. प्रशिक्षित अध्यापकों की शिक्षण अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन किया। प्रस्तुत अध्ययन बागपत जनपद में कार्यरत 150 ग्रामीण एवं 150 नगरीय अध्यापकों का प्रतिदर्श के रूप में चयन किया गया। प्रस्तुत अध्ययन में स्वयं निर्मित प्रश्नावली का निर्माण किया गया। प्रश्नवाली में कुल 30 प्रश्नों को शामिल किया गया। प्रश्नावली में शिक्षकों एवं विद्यार्थियों का सर्वागीण विकास से संबंधित, अध्यापक तथा विद्यालय की परिस्थितियों, सामाजिक परिस्थितियों व विद्यार्थियों की उच्च

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

उपलब्धि से संबंधित प्रश्नों का शामिल किया गया, जिसकी प्रतिक्रिया या उत्तर प्रशिक्षित अध्यापकों को हाँ/ना में देना था। प्रस्तुत अध्ययन में मध्यमान, मानक विचलन आदि सांख्यिकी विधियों का प्रयोग करने के साथ ही आंकड़ों का विश्लेषण किया गया। प्रस्तुत अध्ययन के परिणामों से यह ज्ञात हुआ की बी.एड. एवं बी.पी.एड. प्रशिक्षित अध्यापकों की शिक्षण अभिवृत्ति में सार्थक अंतर है। दोनों समूहों के मध्यमान अवलोकन से यह स्पष्ट हुआ है। बी.पी.एड. प्रशिक्षित अध्यापकों की शिक्षण अभिवृत्ति बी.एड. प्रशिक्षित अध्यापकों की तुलना में उत्तम है। प्रस्तुत अध्ययन से यह अनुमान लगाया जा सकता है कि इन दोनों की प्रशिक्षण प्रक्रिया एक-दूसरे से भिन्न-भिन्न हो सकती है।

सिंह, आर. एवं तिवारी, एम. और वैश्य, के. डी. (2015). शिक्षा, सामाजिक विज्ञान और मानविकी की अनुसंधान पत्रिका ने पर्यावरण प्रदूषण की समस्या के प्रति छात्राध्यापकों एवं छात्राध्यापिकाओं की अभिवृत्तियों का तुलनात्मक अध्ययन किया है। यह अध्ययन कुरुक्षेत्र जिले के शासकीय महाविद्यालयों के विद्यार्थियों पर आधारित है। इस अध्ययन में कुरुक्षेत्र जिले के 04 शासकीय महाविद्यालयों का चयन किया गया। प्रतिदर्श के रूप में के महाविद्यालयों से 200 छात्रों एवं छात्राओं का चयन किया गया। प्रस्तुत अध्ययन में प्रत्येक महाविद्यालय से 25 छात्रों एवं 25 छात्राओं को प्रतिदर्श के रूप में शामिल किया गया। प्रस्तुत अध्ययन में आंकड़ों के संग्रहण के लिए स्वयं निर्मित पर्यावरण अभिवृत्ति मापनी का प्रयोग किया गया। आंकड़ों को संकलित किया गया और आंकड़ों के विश्लेषण के लिए सांख्यिकी तकनीक का प्रयोग किया गया। उसके बाद आंकड़ों का सांख्यिकी विश्लेषण किया गया तथा विश्लेषण करने के पश्चात् प्रस्तुत अध्ययन के परिणामों से यह निष्कर्ष प्राप्त हुए कि पर्यावरण प्रदूषण की समस्या के प्रति छात्रध्यापकों एवं छात्राध्यापिकाओं की अभिवृत्ति में कोई भी सार्थक अंतर नहीं है।

नयाल, एस. जी. और चम्याल, एस. डी. (2016). मासिक पत्रिका बहुविषयक अनुसंधान जर्नल ने प्राथमिक व माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों और विद्यालयों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों के अभिभावकों का गृहकार्य के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन किया है। अध्ययन के लिए उत्तराखण्ड राज्य के अल्मोड़ा जनपद का चयन किया गया। प्रतिदर्श के रूप में प्राथमिक व माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षक/शिक्षिकाओं एवं प्राथमिक व माध्यमिक विद्यालयों में पढ़ने वाले बच्चों के अभिभावकों को शामिल किया गया। 60 व्यक्तियों जिसमें 30 शिक्षक/शिक्षिकाओं एवं 30 अभिभावकों माता/पिता को यादृच्छिक विधि द्वारा प्रतिदर्श के रूप में चयनित किया गया। प्रस्तुत अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया। आंकड़ों को एकत्रित करने के लिए डा.रम्भा जोशी एवं शोधार्थी कु. सरिता नेगी द्वारा स्वनिर्मित गृह कार्य अभिवृत्ति मापनी का प्रयोग किया। प्रस्तुत अध्ययन मे सांख्यिकी तकनीक टी-

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

परीक्षण का प्रयोग करने के साथ ही आंकड़ों के संग्रहण के बाद आंकड़ों का सांख्यिकी विश्लेषण किया गया। प्रस्तुत अध्ययन के परिणामों के आधार पर यह निष्कर्ष प्राप्त हुए कि शिक्षक/शिक्षिकाओं एवं अभिभावकों माता/पिता की गृहकार्य के प्रति अभिवृत्ति सकारात्मक है।

फोनिया, वी. और गोदियाल. एस. (2016) शैक्षिक अनुसंधान की अंतरराष्ट्रीय पत्रिका ने माध्यमिक स्तर वाले शिक्षकों की शैक्षिक प्रक्रिया के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन किया गया। यह अध्ययन उत्तराखंड राज्य के देहरादून जनपद के माध्यमिक स्तर के शिक्षकों पर आधारित है। आज के आधुनिक समय में या स्वरूप में माध्यमिक शिक्षा का महत्त्वपूर्ण स्थान है। माध्यमिक शिक्षा किसी भी राष्ट्र के सामाजिक एवं सांस्कृतिक निर्माण को विकसित करने में अहम भूमिका निभाती है। माध्यमिक शिक्षा राष्ट्र के सामाजिक एवं सांस्कृतिक तथा सूचना प्रौद्योगिकी पर भी विशेष प्रभाव डालती है। माध्यमिक शिक्षा नवयुवकों को शिक्षित करती है। नवयुवक किसी भी राष्ट्र के सामाजिक विकास और आर्थिक विकास में अहम भूमिका निभाते है। माध्यमिक शिक्षा समूची शिक्षा प्रणाली की रीढ़ की हड्डी के समान मानी जाती है। प्रस्तुत अध्ययन में 50 शिक्षकों और 50 शिक्षिकाओं का चयन प्रतिदर्श के रूप में किया गया है, जिसमें शिक्षकों की शैक्षिक प्रक्रिया के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करने के लिए डॉ.एस.पी. अहलूवालिया द्वारा निर्मित शिक्षक अभिवृत्ति मापनी का प्रयोग किया गया। इसमें आंकड़ों का संग्रहण करने के साथ ही सांख्यिकी विधियों द्वारा आंकड़ों का विश्लेषण किया गया। प्रस्तुत अध्ययन के परिणामों से यह निष्कर्ष प्राप्त हुए कि माध्यमिक स्तर पर शिक्षण करने वाले शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं की शिक्षण कार्य के प्रति अभिवृत्ति सामान्य है।

पाण्डेय, डी. और कौर. डी. (2016) अंतरराष्ट्रीय जर्नल आफ अनुप्रयुक्त रिसर्च ने शिक्षा महाविद्यालय के छात्राध्यापकों की अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन किया है। प्रत्येक शिक्षक में सकारात्मक अभिवृत्ति के गुणों का समागम होना चाहिए। तभी वह स्वस्थ समाज और उचित वातावरण का निर्माण कर सकता है क्योंकि वह भावी पीढ़ी के पोषणकर्त्ता के रूप में कार्य करता है। शिक्षक आज के आधुनिक पीढ़ी का सर्वांगीण विकास करता है। इन बातों को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत अध्ययन में शिक्षा महाविद्यालय के छात्राध्यापकों की अभिवृत्ति का अध्ययन किया गया है। यह अध्ययन बिलासपुर शहर में स्थित तीन शिक्षा महाविद्यालयों से 60 छात्राध्यापकों 30 शिक्षक और 30 शिक्षिकाओं का चयन प्रतिदर्श के रूप में किया गया। प्रस्तुत अध्ययन के लिए डॉ.टी.एस.सोढ़ी द्वारा निर्मित सोढ़ी अभिवृत्ति मापनी का प्रयोग आंकड़ों का संग्रहण तथा आंकड़ों का विश्लेषण करने के लिए किया गया। अध्यापक एवं अभिभावक, अनुशासन, जीवन एवं मानवता, देश और धर्म, इन पाँचों विमाओं पर शिक्षकों और शिक्षिकाओं की

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

अभिवृत्ति सकारात्मक है। सांख्यिकी निष्कर्ष के आधार पर शून्य परिकल्पना स्वीकृत हुई है अर्थात् विभिन्न दृष्टिकोणों से शिक्षक और शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति में कोई भी सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

निवास, आर. और नौटियाल, के. ए. (2017). अंतरराष्ट्रीय जर्नल आफ अनुप्रयुक्त रिसर्च ग्रंथालय ने बी.एड. पाठ्यक्रम के छात्रध्यापकों की शिक्षण के प्रति सृजनात्मक अभिवृत्ति एवं शिक्षण सक्षमता का अध्ययन किया है। राष्ट्रीय विकास के लिए मानवीय संसाधनों को उपयोगी बनाने के लिए शिक्षकों की अहम भूमिका होती है। कक्षा में शिक्षक अनेक क्रिया-कलापों एवं शिक्षण युक्त विधियों का प्रयोग करता है। आज के आधुनिक समय में गुणात्मक शिक्षा मुहैया करवाने पर अधिक बल दिया जा रहा है, जो शिक्षण प्रक्रिया में सृजनात्मक अभिवृत्ति विद्यार्थियों की रचनात्मकता को विकसित करती है, जिससे उपलब्ध भौतिक एवं मानवीय संसाधनों का समुचित प्रयोग करके परिणामों में सुधार किया जा सकता है। यशपाल समिति (1992) ने शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम में छात्रध्यापकों के स्वतंत्र चिंतन व स्व-अधिगम क्षमता के विकास पर मुख्य बल दिया है। उच्च स्तर के शिक्षण संस्थानों को स्थापित करने में अध्यापकों की सृजनात्मक शिक्षण अभिवृत्ति एवं शिक्षण कौशल सक्षमता को एक महत्त्वपूर्ण कारक समझा जाता है। प्रस्तुत अध्ययन में देहरादून जनपद के रायपुर ब्लॉक में स्थित शिक्षा महाविद्यालयों में अध्ययनरत बी.एड.प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले कुल 132 विद्यार्थियों 65 कला संकाय और 67 विज्ञान संकाय वाले विद्यार्थियों का चयन यादृच्छिक विधि द्वारा प्रतिदर्श के रूप में किया गया। प्रस्तुत अध्ययन में डॉ. बी.के.पासी एवं डॉ.एम.एस.ललिता की मानकीकृत सामान्य शिक्षण सक्षमता मापनी तथा डॉ. आर.पी.शुक्ला द्वारा निर्मित सृजनात्मक शिक्षण अभिवृत्ति मापनी का प्रयोग आंकड़ों को एकत्रित करने के लिए किया गया। आंकड़ों के विश्लेषण के लिए सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया गया और विश्लेषण करने के पश्चात प्राप्त परिणामों के आधार यह निष्कर्ष प्राप्त हुए कि कला एवं विज्ञान संकाय के विद्यार्थियों की शिक्षण सक्षमता में समानता है, परंतु सृजनात्मक शिक्षण अभिवृत्ति के मध्यमान स्तर में सार्थक अंतर पाया गया है। कला संकाय के विद्यार्थियों की शिक्षण सक्षमता एवं शिक्षण अभिवृत्ति के मध्य सकारात्मक सहसंबंध है, तथा विज्ञान संकाय के विद्यार्थियों की शिक्षण सक्षमता एवं सृजनात्मक अभिवृत्ति में नकारात्मक सहसंबंध है।

बाला, आर. (2018). आयुशी इंटरनेशनल बहुविषयक अनुसंधान जर्नल ने उच्च माध्यमिक स्तर वाले विद्यालयों के शिक्षकों की शैक्षिक तकनीकी प्रयोग के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन किया है। प्रस्तुत अध्ययन राजस्थान राज्य के हनुमानगढ़ जनपद के विद्यालयों के शिक्षकों पर आधारित है। प्रस्तुत अध्ययन में 50 सरकारी विद्यालयों के शिक्षकों 50 गैर सरकारी विद्यालयों के शिक्षकों का चयन प्रतिदर्श के रूप में किया गया। शिक्षकों की शैक्षिक तकनीकी प्रयोग के प्रति अभिवृत्ति अध्ययन के लिए

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

डॉ.एस.राजशेखर द्वारा निर्मित मापनी का उपयोग किया गया। आंकड़ों का संग्रहण तथा आंकड़ों का विश्लेषण किया गया। प्रस्तुत अध्ययन के आंकडों से यह परिणाम प्राप्त हुए है कि उच्च माध्यमिक स्तर वाले विद्यालयों के शिक्षकों की शैक्षिक तकनीकी प्रयोग के प्रति अभिवृत्ति में कोई भी अंतर नहीं है।

शर्मा, यु. और शर्मा, एस. वी. (2018). मानव संसाधन और सामाजिक विज्ञान के अंतरराष्ट्रीय अनुसंधान जर्नल ने समावेशी शिक्षा के प्रति बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की अभिवृत्ति का अध्ययन किया है। भारत में आज भी विकलांगता, आर्थिक, विभेद, जातीय, अत्याचार, शोषण, सामाजिक बहिष्कार, भेदभाव जैसे तत्व पाये जाते है। असमर्थ बच्चों को अन्य बच्चों के साथ शिक्षा में शामिल करना ही समावेशी शिक्षा कहलाता है। वर्तमान समय शिक्षा में समानता, सहभागिता, स्वतन्त्रता, अधिकारों की चर्चाएँ हो रही है। सामाजिक, सांस्कृतिक, शारीरिक एवं मानसिक दृष्टि से अभावग्रस्त बच्चों का स्वभाविक विकास बाधित हो जाता है। यह अभावग्रस्त बच्चे जो किन्हीं कारणवश सामान्य बच्चों के साथ नहीं रह पाते है और उनके साथ शिक्षा प्राप्त नहीं कर पाते है। समावेशी शिक्षा के द्वारा इन असमर्थ बच्चों को अन्य बच्चों के साथ सम्मिलित किया जाता है। जिससे वह विभिन्न सामाजिक भेदभाव, बहिष्कार, उपेक्षाओं से बचकर अपने स्वभाविक विकास की ओर अग्रषित होते हैं। प्रस्तुत अध्ययन में जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय के बी.एड. के 50 विद्यार्थियों का 25 छात्रों एवं 25 छात्राओं का चयन प्रतिदर्श के रूप में किया गया। प्रस्तुत अध्ययन में आंकड़ों के संग्रहण के लिए सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। प्रदत्त संकलन के लिए स्वनिर्मित मापनी का निर्माण किया गया एवं उसका प्रयोग किया गया। प्रस्तुत अध्ययन के आंकड़ों एकत्रित करने के पश्चात् सांख्यिकी विधियों का प्रयोग कर आकड़ों का विश्लेषण किया गया। प्रस्तुत अध्ययन के परिणामों से यह निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं कि बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की समावेशी शिक्षा की प्रति अभिवृत्ति ग्रामीण व शहरी सभी प्रशिक्षणार्थीयों की समावेशी शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति एक समान है। ग्रामीण क्षेत्र की छात्र व छात्राओं की अभिवृत्ति भी एक समान है। परंतु शहरी क्षेत्र के छात्र व छात्राओं का समावेशी शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में अंतर पाया गया है। अर्थात् शहरी क्षेत्र के छात्र व छात्राओं का समावेशी शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति अलग-अलग है।

शर्मा, श. कु. (2018). उन्नत और विकास अनुसंधान की अंतरराष्ट्रीय पत्रिका ने सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन के प्रति ग्रामीण क्षेत्रों के शिक्षकों की अभिवृत्ति का अध्ययन किया है। प्रस्तुत अध्ययन मध्यप्रदेश राज्य के होशंगाबाद जनपद के ग्राम सागाखेड़ा कलॉ के शिक्षकों पर किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन का मुख्य उद्देश्य शिक्षकों एवं विद्यार्थियों का सर्वागीण विकास करना है। इसी बात को ध्यान में रखते हुए (एन.सी.एफ 2005) ने अपनी योजना के अंतर्गत सतत् एवं व्यापक मूल्याकंन को विद्यालय स्तर पर लागू करवाने कि सिफारिश की। इस परिप्रेक्ष्य के आधार पर मध्य प्रदेश में भी नि:शुल्क शिक्षा

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

एवं अनिवार्य शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 के अंतर्गत होशंगाबाद जनपद के ग्राम सागाखेड़ा कलॉ क्षेत्र में कार्यरत माध्यमिक स्तर वाले शिक्षकों के विद्यालयों कक्षा 6 से 8 तक का सतत् एवं व्यापक मूल्याकंन का अध्ययन किया गया। ग्रामीण शिक्षकों की सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन के प्रति अभिवृत्ति के अध्ययन को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत अध्ययन की परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया। प्रतिदर्श के रूप में होशंगाबाद जनपद के ग्राम सागाखेड़ा कलॉ के 30 शिक्षकों (15 शिक्षक एवं 15 शिक्षिकाओं) का चयन यादृच्छिक विधि के द्वारा किया गया आंकड़ों के संग्रहण के लिए डॉ. विशाल सूद एवं डॉ. श्रीमति आरती आनंद द्वारा निर्मित मानकीकृत मापनी (सतत् एवं व्यापक मूल्याकंन के प्रति अभिवृत्ति मापनी) का उपयोग किया गया। आंकड़ों को एकत्रित करने के लिए सांख्यिकी विधियों का प्रयोग करने के साथ ही आंकड़ों का विश्लेषण किया गया। प्रस्तुत अध्ययन के परिणामों में यह निष्कर्ष प्राप्त हुए कि सतत् एवं व्यापक मूल्याकंन के प्रति ग्रामीण शिक्षकों की अभिवृत्ति ‘‘औसत से अधिक’’ है।

ओझा, जी. और वर्मा, एम. (2018). इंटरनेशनल जर्नल ऑफ साइंटिफिक रिसर्च इन साइंस एंड टेक्नोलॉजी ने महाविद्यालयों में अध्यापनरत शिक्षकों की शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन किया है। शिक्षा मानव विकास का मूल आधार है। प्रस्तुत अध्ययन में प्रयागराज जनपद के वित्तीय सहायता प्राप्त महाविद्यालयों एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों में अध्यापनरत शिक्षकों पर आधारित है। प्रस्तुत अध्ययन में 50 शिक्षक सहायता प्राप्त महाविद्यालयों के 50 शिक्षक स्ववितपोषित महाविद्यालयों के कुल 100 शिक्षकों का प्रतिदर्श के रूप में चयन किया गया। प्रस्तुत अध्ययन में डॉ. एस. एल. चोपड़ा द्वारा निर्मित मानकीकृत उपकरण (शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति सूची) का प्रयोग किया गया। प्रस्तुत अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग कारण के साथ ही आंकड़ों का संग्रहण किया गया और आंकड़ों के विश्लेषण के लिए मध्यमान, मानक विचलन, मानक त्रुटि, एवं टी-मान सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया गया। प्रस्तुत अध्ययन के परिणामों के आधार पर यह निष्कर्ष प्राप्त हुए कि महाविद्यालयों में अध्यापनरत शिक्षकों की शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर है। सार्थकता के स्तर पर वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर है।

सिंह, के. (2018). स्कॉलरली रिसर्च जर्नल आफ बहुविषयक अध्ययन ने सेवापूर्व छात्र-अध्यापकों की कौशल विकास कार्यक्रमों के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन किया है। शिक्षा व्यक्तियों को ज्ञान और कौशल से परिपूर्ण करने की एक प्रकिया है। अध्यापक शिक्षा में अभ्यास शिक्षण सबसे महत्त्वपूर्ण व्यवहारिक गतिविधियों में से एक होती है। शिक्षक के महत्त्व के संदर्भ मे डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन जी ने कहा है कि शिक्षक का समाज में महत्त्वपूर्ण स्थान होता है वह एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को बौद्धिक, सांस्कृतिक,

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

सामाजिक और तकनीकी कौशलों का अवबोध करवाने में अहम भूमिका निभाता है। प्रस्तुत अध्ययन में क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान भोपाल, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान अजमेर, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, दक्षिण बिहार केंद्रीय विश्वविद्यालय, डॉ. हरी सिंह गौर विश्वविद्यालय से कुल 430 छात्र अध्यापकों का चयन प्रतिदर्श के रूप में किया। आंकड़ों के लिए स्वयं निर्मित मापनी का निर्माण करने के साथ ही आंकड़ों के संग्रहण के लिए सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया गया तथा आंकड़ों का संग्रहण करने के पश्चात् आंकड़ों का विश्लेषण किया गया तथा निष्कर्ष में यह परिणाम प्राप्त हुए कि छात्रध्यापकों की कौशल विकास कार्यक्रमों के प्रति अभिवृत्ति सकारात्मक है।

उपसंहार :- संबंधित साहित्य के पुनरावलोकन का अध्ययन करने के बाद यह ज्ञात होता है कि अभिवृत्ति विषय पर विभिन्न अनुसंधान कार्य हुए है। संबंधित साहित्य का अध्ययन करने के बाद यह स्पष्ट होता है, कि शिक्षकों से संबंधित विभिन्न आयामों पर जैसे शिक्षण अभिक्षमता, शिक्षण अभिवृत्ति, शैक्षिक प्रक्रिया, कक्षा में अन्तः क्रिया आदि पर शोध कार्य हो चुके है। अभिवृत्ति विषय को लेकर के भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में अनुसंधान तो हुए है, परंतु वह किसी भी अंतिम निष्कर्ष पर नहीं पहुँचे हैं। इसलिए वर्तमान परिपेक्ष्य को दृष्टिगत रखते हुए विभिन्न शोध-पत्रों, पुस्तकों, सहायक सामग्रियों की सहायता से माध्यमिक स्तर के शिक्षकों की शैक्षिक अभिवृत्ति का अध्ययन शोध प्रपत्र लेखन-कार्य को पूर्ण किया है।

निष्कर्ष

प्राचीन काल में शिक्षकों का स्थान सर्वोपरि माना जाता था। शिक्षण करना शिक्षकों का व्यवसाय नहीं अपितु जीवन का एक प्रमुख एवं पवित्र लक्ष्य हुआ करता था। शिक्षा जिससे किसी भी राष्ट्र का निर्माण होता है और विकास होता है। हमारा देश जो कभी विश्वगुरू था सभी विद्याओं में अग्रणी हुआ करता था। विश्व के अन्य देशों से विद्यार्थी हमारे भारत में शिक्षा ग्रहण करने के लिए विख्यात गुरूकुलों- तक्षशिला, नालंदा, विक्रमशिला आदि में आते थे। विभिन्न विद्याओं में अग्रणी होने की बात तो विश्व प्रसिद्ध इतिहासकार भी स्वीकार किया करते है। इसलिए शिक्षण से न केवल आजीविका कमाने का अवसर मिलता है बल्कि यह पुराने और महान पेशों में शामिल किया जाता है और शिक्षकों को राष्ट्र निर्माता भी कहा जाता है। शिक्षा के स्वरूप में माध्यमिक शिक्षा का महत्वपूर्ण स्थान है,

अतः माध्यमिक शिक्षा को समूची शिक्षा प्रणाली की रीढ़ की हड्डी के समान माना जाता है। माध्यमिक शिक्षा राष्ट्र के तकनीकी तथा सांस्कृतिक जीवन पर विशेष प्रभाव डालती है। यह शिक्षा उन नवयुवकों को शिक्षित करती है, जो किसी भी राष्ट्र के समाजिक निर्माण तथा आर्थिक विकास में प्रभावशाली हो सकती है। ऐसी स्थिति में माध्यमिक स्तर के शिक्षकों की भूमिका के निर्वाह की अनिवार्यता स्वतः ही सुस्पष्ट हो जाती है। शिक्षकों की भूमिका निर्वाह प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रूप से उनके शिक्षण कार्यों के प्रति

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

अभिवृत्ति पर निर्भर हुआ करती है। व्यक्तियों को शिक्षा एक व्यवसाय या रोजगार और औपचारिकता मात्र न समझकर वह शिक्षा को सामाजिक विकास के लिए अति महत्त्वपूर्ण समझ सकते है। इस प्रकार से वह समस्त व्यक्ति शिक्षा के महत्त्व को स्वीकार करते हुए शिक्षा को व्यवसाय के रूप में ग्रहण कर सकते है। वह समस्त व्यक्ति जो शिक्षा के साथ जुड़ना चाहते है वह शिक्षा को व्यवसाय या औपचारिकता भर न समझकर स्वयं के लिए और सामाजिक विकास के लिए जरूरी समझते है। शिक्षा से संबंध रखने वाले समस्त व्यक्ति अपने अध्यापन कार्य को पूर्ण निष्ठा एवं ईमानदारी के साथ किया करते है।

उपरोक्त संबंधित साहित्य का अध्ययन करने के पश्चात् यह स्पष्ट होता है कि अनुसंधान के क्षेत्र माध्यमिक स्तर के शिक्षकों की शैक्षिक अभिवृत्ति का अध्ययन से संबंधित शोध कार्य तो हुए है। परन्तु ज्ञान एवं अध्ययन के दृष्टिकोण से वह पर्याप्त नही है। वर्तमान परिपेक्ष्य को दृष्टिगत रखते हुए, शिक्षा के क्षेत्र में नवीन ज्ञान का सृजन किया जा सके। ताकि समाज के सर्वागीण विकास में सकारात्मक योगदान अदा कर सकें।

संदर्भ-ग्रंथ सूची

आलपोर्ट, जी. डब्लू. (1935). हैन्ड्बुक ऑफ सोशल साइकोलॉजी. वारसेस्टर : क्लार्क यूनिवर्सिटी प्रेस, पृ.सं.173-210.

कुप्पुस्वामी, बी. (1975). सामाजिक मनोविज्ञान के मूल तत्व. नई दिल्ली: विकास प्रकाशन , 7, पृ.सं.109-110

श्रीवास्तव, आर. और आलम, के. ए. (1998). आधुनिक सामाजिक मनोविज्ञान. दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास, 1, पृ.सं. 397-399.

बैरन, आर. ए. तथा बायर्न, डी. (2004). समाज मनोविज्ञान. ओक्लाहोमा स्टेट यूनिवर्सिटी, 11, पृ.सं. 31-36, 209-236.

श्रीवास्तव, के. ए. और लाल, बी. (2013). निःशुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 के प्रति अध्यापकों की अभिवृत्ति का अध्ययन. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ क्रिएटिव रिसर्च, 1(12), पृ.सं. 1-6.

क्रो एवं क्रो, और चौहान, एस. एस. (2015). आधुनिक शिक्षा मनोविज्ञान, हिंदी अनुवाद पुस्तक, पृ.सं. 16.

मूछाल, एम. कु. और चन्द, एस. (2015). प्राथमिक स्तर पर कार्यरत बी.एड. एवं बी.पी.एड. प्रशिक्षित अध्यापकों की शिक्षण अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन, एशियन जर्नल ऑफ द बहुविषयक अध्ययन, 3(11) पृ.सं.164-168.

सिंह, आर. एवं तिवारी, एम. और वैश्य, के. डी. (2015). पर्यावरण प्रदूषण की समस्या के प्रति छात्राध्यापकों एवं छात्राध्यापिकाओं की अभिवृत्तियों का तुलनात्मक अध्ययन, शिक्षा, सामाजिक विज्ञान और मानविकी की अनुसंधान पत्रिका, 1(2), पृ.सं. 22-26.

अग्रवाल, वी. (2016). मनोविज्ञान कक्षा 12. एस. बी.पी.डी.प्रकाशन, 2(1), पृ.सं.155-157.

फोनिया, वी.और गोदियाल, एस. (2016). देहरादून जिले माध्यमिक विद्यालयों मे अध्यापकों की अध्यापन के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन, शैक्षिक अनुसंधान की अंतरराष्ट्रीय पत्रिका. 1(5), पृ.सं. 498-505.

नयाल, एस. जी. और चम्याल, एस. डी. (2016). प्राथमिक व माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों और विद्यालयों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों के अभिभावकों का गृहकार्य के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन, मासिक पत्रिका बहुविषयक अनुसंधान जर्नल, 5 (12), पृ.सं. 1-4.

सिंह, ए. के. (2016). उच्चतर सामान्य मनोविज्ञान. दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास, पृ.सं. 712-713.

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

पाण्डेय, डी. और कौर, डी. (2016). शिक्षा महाविद्यालय के छात्राध्यापकों की अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन, अंतरराष्ट्रीय जर्नल आफ अनुप्रयुक्त रिसर्च, 2(9), पृ.सं. 827-829.

वशिष्ठ, के. सी. (2016). शिक्षक अभिवृत्ति एवं अभिरुचि परीक्षण. उपकार प्रकाशन, 12(2), पृ.सं.व 124-126.

निवास, आर. और नौटियाल, के. ए. (2017). बी.एड. पाठ्यक्रम के छात्राध्यापकों की शिक्षण के प्रति सृजनात्मक अभिवृत्ति एवं शिक्षण सक्षमता का अध्ययन, अंतरराष्ट्रीय जर्नल आफ अनुप्रयुक्त रिसर्च ग्रंथालय, 5(7), पृ.सं. 587-597.

बाला, आर. (2018). उच्च माध्यमिक स्तर के शिक्षकों की शैक्षिक तकनीकी के प्रयोग के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन. आयुशी इंटरनेशनल बहुविषयक अनुसंधान जर्नल 5(3), पृ.सं.464-468.

भटनागर, ए. (2018). मनोविज्ञान पुस्तक. दिल्ली: एन.सी.ई.आर.टी. प्रकाशन, पृ.सं.114-123.

शर्मा, यु. और शर्मा, एस. वी. (2018). समावेशी शिक्षा के प्रति बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की अभिवृत्ति का अध्ययन, मानव संसाधन और सामाजिक विज्ञान के अंतरराष्ट्रीय अनुसंधान जर्नल , 3(9), पृ.सं. 795-797.

शर्मा,श. कु. (2018). सतत एवं व्यापक मुल्यांकन के प्रति ग्रामीण क्षेत्रों के शिक्षकों की अभिवृत्ति का अध्ययन, उन्नत और विकास अनुसंधान की अंतरराष्ट्रीय पत्रिका, 5(1) पृ.सं. 672-677.

ओझा, जी. और वर्मा, एम. (2018). महाविद्यालयों में अध्यापनरत शिक्षकों की शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ साइंटिफिक रिसर्च इन साइंस एंड टेक्नोलॉजी, 4(7), पृ.सं. 800-805.

सिंह, के. (2018). सेवापूर्व छात्र अध्यापकों की कौशल विकास कार्यक्रमों के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन, स्कॉलरली रिसर्च जर्नल आफ बहुविषयक अध्ययन, 6(51) पृ.सं. 12572-12584.

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language